विश्व की

कालयात्रा

कालपुरुष-इतिहासपुरुष

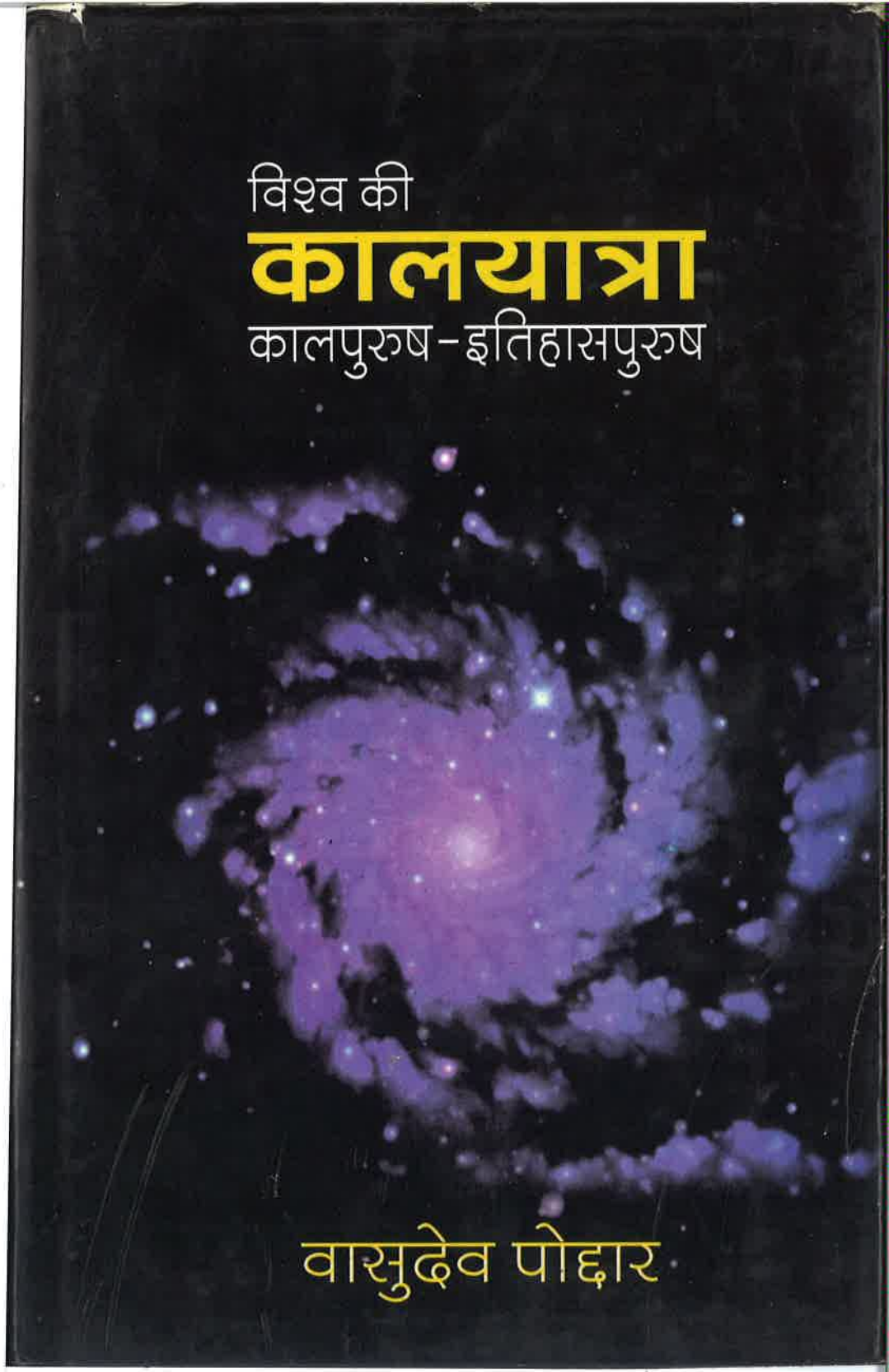

वासुदेव पोद्दार

ॐ

प्रस्ताविका

ऋषिप्रज्ञाके विज्ञानचिन्तन पर मेरी पुस्तक 'कालयात्रा' का प्रकाशन १९८५ के अन्तमें हुआ था। विश्वके सुप्रसिद्ध ब्रह्माण्डशास्त्री Stephen Hawking की बहुचर्चित पुस्तक A Brief History of Time १९८८ में प्रकाशित हुई, सृष्टिकालके इतिहास पर लिखी गई इस पुस्तकका आधार आजका विज्ञान है। 'कालयात्रा' का प्रकाशन इससे दो-ढाई वर्ष पूर्व हो गया था। इस ग्रन्थकी प्रधान विषयवस्तु आधुनिक विज्ञानके सन्दर्भमें ऋषिप्रज्ञाका विज्ञानचिन्तन है, जिसके आधार पर वहाँ विश्वके समुद्भवका कालक्रमागत इतिहास प्रस्तुत हुआ है। समय-समय पर हमारे देशके विद्वानों द्वारा अपनी अनुशंसाओंके साथ इसका स्वागत होता रहा, अनेक शोध एवं शिक्षण संस्थानोंका सम्मान प्राप्त हुआ एवं साथ ही ग्रन्थको पुरस्कृत भी किया गया। यहाँ तक कि राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय उदयपुरके द्वारा २७ जनवरी १९९१ को लेखकको डी० लिट० की सर्वोच्च मानद उपाधिके अलंकरणसे सम्मानित किया गया, विश्वविद्यालयके उपकुलपति श्रद्धेय आचार्यप्रवर जनार्दनजी नागरसे जो स्नेह प्राप्त हुआ, वह मेरे लिए सर्वदा अविस्मरणीय है।

लगभग एक सहस्र पृष्ठोंके मूलग्रन्थ – 'कालपुरुष एवं इतिहास पुरुष' के सार संक्षेप सहित इस 'कालयात्रा' की संरचनाका महत् श्रेय परम श्रद्धेय अग्रज स्व० हरिप्रसादजी लोहियाको है। उन्होंने मुझे वह तीक्ष्ण बौद्धिक

धार प्रदान की, जिससे मैं इस कार्यको सम्पन्न करनेमें समर्थ हो सका; उनका सर्वतोमुखी पाण्डित्य मेरे लिए सर्वदा नमस्य है। पण्डितप्रवर स्व० श्यामसुन्दरजी शुक्लसे मुझे सदैव प्रस्तुत विषय पर सत्परामर्श प्राप्त होता रहा, जिसे विस्मृत कर देना मेरे लिए असम्भव है। श्रद्धेय अग्रज श्रीपुरुषोत्तमजी हलवासियाने मूलग्रन्थ सहित सार संक्षेपको आद्योपान्त पढ़कर जो परामर्श मुझे प्रदान किया, उसके लिए मैं सदाके लिए उनका प्रशंसक बन गया। परम श्रद्धेय कविवर श्रीकन्हैयालालजी सेठियाके आशीर्वादको कदापि भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशनकी बात सुनकर मेरा उत्साहवर्धक अभिनन्दन ही कर दिया। परम आदरणीय अग्रज कविश्रेष्ठ श्रीनथमलजी केडियाने शताधिक बार ग्रन्थकी प्रगतिके बारेमें पूछते हुए सर्वदा मुझे उत्साहित किया, जो अविस्मरणीय है। गणित एवं उर्दूके पारदर्शी पण्डित भाई रेवतीलालजी शाहका स्नेह और परामर्श मुझे प्रारम्भिक कालमें प्राप्त हुआ, उसे भूल पाना कठिन है। स्व० श्रीमुनिचन्दजी भण्डारी एक ऐसे श्रेष्ठ मित्र थे, जिनका अभाव मुझे सर्वदा स्मरण हो आता है। उनका सहयोग ग्रन्थके सन्दर्भमें अतुलनीय था।

'विश्वकी कालयात्रा' के प्रकाशनकी भावमय चतुर्भुज विभूति परम श्रद्धेय श्रीमोरोपन्त नीलकण्ठजी पिंगले, परम आदरणीय प्रो० ठाकुर रामसिंहजी, सुहृदय श्रेष्ठ डॉ० सुजितजी धर एवं मेरे श्रद्धाभाजन श्रीहरिमोहनजी पुरी हैं। इनकी सत्प्रेरणासे अभिप्रेरित होकर मैं 'विश्वकी कालयात्रा' के प्रकाशन कार्यमें प्रवृत्त हो सका हूँ, मेरे प्रति इनका अपार स्नेह ही इस कार्यमें हेतुभूत है; आदरणीय पुरीजी मेरे कार्यमें प्रतिबन्धक रूपसे उपस्थित मेरे ही स्वभावगत शैथिल्यको अपनी सन्निधि मात्रसे निवृत्त कर मुझे सक्रिय करते रहे हैं। श्री सत्यानन्द देवायतनके तपोवनकी महाविभूति परमश्रद्धेया मातुश्री अर्चनापुरीका पावन स्मरण मेरेलिए परम अभिप्रेत है, जिससे यह कार्य भलीभाँति सम्पन्न हो पाया, साथ ही आश्रमके वरेण्य तपःपूत

महामुनि श्रीमृगानन्दजी एवं श्रीहीरानन्दजी महाराजका उत्साहवर्धक आशीर्वाद मुझे सम्पर्क मात्रसे ही प्राप्त हो गया, इसे भूल पाना सहज सम्भव नहीं – ये सभी मेरे लिए नमस्य हैं।

'विश्वकी कालयात्रा' के सन्दर्भमें मित्रप्रवर श्रीविनोदकृष्णजी कानोड़ियाके प्रभावी हस्तक्षेपने एक अनुशासनकी तरह मेरे बौद्धिक क्षितिजको घेर कर ग्रन्थको और भी समाहित और सज्जित कर दिया, ऐसे मित्रके प्रति आभार प्रदर्शन कर मैं उनसे उऋण होना नहीं चाहता। परम आदरणीया, प्रिय बहिन, कल्याणी वाक्स्वरूपा विदुषी कृष्णा खेतान एवं तद्रूप हितैषी श्रीदिलीपकुमारजी खेतान दोनोंने दिन-रात एक कर अपने सारे दैनिक कार्योंको गौण करते हुए पूरे ग्रन्थको अल्पकालमें ही अपने कम्प्यूटर पर उट्टङ्कित कर दिया। उनका स्नेहभरा यह महत्कार्य मेरे लिए जीवनमें एक बहुत बड़ा अर्थ रखता है। मुझे प्रतीत होता है, मैं कितना सौभाग्यशाली हूँ; इतनी ममतामयी तो सहोदरा बहिन भी नहीं होती। इनके इस अनिर्वचनीय स्नेहने मुझे भी इस कृतज्ञता ज्ञापनके सन्दर्भमें अनिर्वचनीय बना दिया। ऐसी ही किंनिर्वाच्यमूढ़ताका अनुभव मुझे आदरणीय भाई श्रीकेशवजी कायाँके साथ होता है। उन्होंने ग्रन्थके संयोजनकी नवीनताका सारा भार अपने ऊपर लेकर मुझे सर्वथा भारमुक्त कर दिया– ऐसा एकात्म-बोध आज संसार में सुदुर्लभ है। पण्डितप्रवर आचार्य श्री कल्याणमलजी लोढाके परमपाण्डित्यका स्नेहभाजन मैं सर्वदा रहा हूँ, अतः इनके प्रति कृतज्ञताज्ञापनकी विधि मेरे लिए श्रद्धा निवेदन है। कला एवं पुरातत्त्वके अतलस्पर्शी पाण्डित्यके धनी डॉ० श्यामलकान्तजी चक्रवर्ती, निदेशक – भारतीय संग्रहालय, कलकत्ता (इण्डियन म्यूजियम) का मैं विशेष कृपाभाजन बन गया हूँ, फलतः मुझे इनसे वेदव्यासका वह दुर्लभ चित्र प्राप्त हो गया, जो टोकियो स्थित जापानके ओकुरा शूकोकान संग्रहालय में सुरक्षित, संवत् १४१४ की एक प्रस्तरमूर्तिका है। पुस्तक पर अपना वैदुष्यपूर्ण अभिमत प्रदानकर कलकत्ता विश्वविद्यालय के Applied Physics के प्रख्यात विद्वान्

प्रो० श्रीराधेश्यामजी ब्रह्मचारीने मुझे कृतज्ञताज्ञापन का अधिकार प्रदान कर दिया - मैं सर्वदा उनका आभारी हूँ। परम आदरणीय अग्रज श्रीजुगलकिशोरजी जैथलिया इस कार्यमें मुझे सर्वदा उत्साहित करते रहे, उन्हें भूल पाना भी असम्भव है। आचार्यश्रेष्ठ श्रीरामजी पाण्डेय एवं डॉ० कमलाप्रसादजी द्विवेदीने प्रूफ देखकर मुझे भारमुक्त कर दिया है, अत: ये मेरी दृष्टिमें कृतज्ञताके प्रथम अधिकारी हैं। मैं श्रेष्ठ गीतकार एवं कवि बन्धुवर श्री मिलापजी दूगड़ का आभार किन शब्दों में प्रकट करूँ, जिन्होंने ग्रन्थके अन्तिम परिशोधन पर दृष्टिपात करते हुए मुझे निश्चिन्त कर दिया।

अन्तमें मेरी सम्पूर्ण श्रद्धाका अन्वय महापण्डित अचार्यप्रवर श्रीशिवाधारजी सिंह (जौनपुर) के चरणोंमें होता है, जिनके परमपाण्डित्यकी कृपा प्राप्त कर मैं जीवनमें दो अक्षर लिख पढ़ सका।

वासुदेव पोद्दार

सृष्टि संवत् – कलिअब्द ५१०१
मकर संक्रान्ति
वि० सं० २०५६ पौष शुक्ला ९ शनिवार
१५ जनवरी २००० ईसवी